कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या 1240319

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

y
vine

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय इतिहास

परीक्षा का दिन शनिवार

दिनांक 22-3-25

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ: 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	18	19	4
2	6	20	5
3	10½	21	
4	2	22	
5	2	23	
6	2	24	
7	2	25	
8	2	26	
9	2	27	
10	2	28	
11	2	29	
12	2	30	
13	2	31	
14	3	योग	79½
15	3	प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16	3	अंकों में	शब्दों में
17	2	80	अस्सी
18	4		

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक 31142

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 60 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज ही उपयोग में लिया गया है। 180/2025

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी:–
   - (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   - (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   - (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   - (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबल के आस–पास कोई अनुचित सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   - (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		"खण्ड - अ"
		उत्तर संख्या - 1
	(i)	(स) मेगस्थनीज
	(ii)	(अ) अशोक
	(iii)	(अ) 1919
	(iv)	(द) बी. बी. लाल
	(v)	(अ) बुद्ध का जन्म - लुम्बिनी
	(vi)	(स) भोपाल
	(vii)	(स) मुहम्मद बिन तुगलक
	(viii)	(स) 12
	(vix)	(ब) मुइनुद्दीन चिश्ती
	(x)	(अ) विजयनगर

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1	(XI)	(द) तुलुव
1	(XII)	(स) सिपह - आबादी
1	(XIII)	(द) बंजर
1	(XIV)	(ब) 1813
1	(XV)	(अ) अमेरीका
1	(XVI)	(द) लॉर्ड डलहौजी
1	(XVII)	(स) गुजरात
1 (18)	(XVIII)	(द) बी. आर. अंबेडकर
		उत्तर संख्या - 2
1	(I)	मौर्य।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1	(ii)	चाण्डालों।
1	(iii)	973 ई.।
1	(iv)	विजयनगर।
1	(v)	कपास।
1 (6)	(vi)	बुकानन।

उत्तर संख्या-3

1	(i)	हरियाणा मे।
1	(ii)	अशोक वह पहला सम्राट था जिसने अपने अधिकारियो और प्रजा के लिए संदेश प्राकृतिक पत्थरो और पॉलिश किए हुए स्तंभो पर खुदवाये थे।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	(iii)	इतिहास की श्रेणी में।
2	(iv)	बुद्ध अपने जीवनकाल मे मौखिक शिक्षा देते थे तथा उनके निर्वाण के पश्चात उनके अनुयायियों ने समय - समय पर अनेक बौद्ध संगतियां बुलाई। जिसमे उनकी शिक्षाओ का संकलन किया गया। इस कारण बौद्ध धर्म देश -विदेश मे फैला तथा अनके यात्री बौद्ध ग्रंथो की खोज मे भारत आए।
	(v)	फ्रांस का।
	(vi)	सगुण भक्ति परंपरा - वह भक्ति परंपरा जिसमे विशेषण युक्त ईश्वर की उपासना की जाती है सगुण भक्ति परंपरा कहलाती है। इसके अन्तर्गत राम, कृष्ण, विष्णु, शिव आदि के साकार रूप मूर्तियों की पूजा की जाती है।
	(vii)	1565 ई. मे।

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(VIII) खुद काश्त - मुगलकालीन समाज मे दो प्रकार के किसानो का उल्लेख मिलता है।
"खुद काश्त वे किसान होते है जो उन्ही गांवो मे रहते है जहां उनकी व्यक्तिगत जमीन होती है तथा वे वही रहकर खेती करते है। ऐसे किसान खुद-काश्त कहलाते है।

(IX) इस्तमरारी बंदोबस्त की विशेषता -

बंगाल मे वहां के गवर्नर जनरल द्वारा 1793 मे एक राजस्व वसूली के लिए नीति बनाई गई जिसे इस्तमरारी बंदोबस्त कहा जाता है।

"इसमे राजस्व की राशि निश्चित कर दी जाती है जिसे प्रत्येक जमींदार को निश्चित तक चुकानी पड़ती है अन्यथा उसकी जमींदारी नीलाम कर दी जाती है।"

(X) दक्षिण अफ्रीका ने ही गांधीजी को "महात्मा" बनाया। चंद्रन देवनेसन के अनुसार गांधीजी दक्षिण अफ्रीका के द्वारा ही महात्मा बने। क्योंकि दक्षिण अफ्रीका मे ही गांधीजी ने सर्वप्रथम सत्याग्रह चलाया तथा अपनी अहिंसा की नीति

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

को अपनाकर वहां प्रचलित रंगभेद की नीति का खात्मा कराया।
इस प्रकार हम कह सकते है कि दक्षिण अफ्रीका ने ही गांधीजी को महात्मा बनाया।

10½

1

(xi) संविधान सभा का गठन अप्रत्यक्ष मतदान द्वारा हुआ था। संविधान सभा के सदस्यो को निर्वाचित प्रांतीय विधायिका के सदस्यो द्वारा चुना गया था।
संविधान सभा मे कांग्रेस को भारी बहुमत प्राप्त हुआ। मुस्लिम लीग को भी आरक्षित सीटो पर बहुमत मिला। किंतु लीग व समाजवादी पार्टी द्वारा संविधान सभा का बहिष्कार कर दिया। इस तरह संविधान सभा मे 82 प्रतिशत सदस्य कांग्रेस के थे।

"खण्ड-द"

उत्तर संख्या -5

सिंधु घाटी सभ्यता मे सिंचाई के लिए अनेक साधनो का प्रयोग किया जाता

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

था। हड़प्पा सभ्यता मे कुओ, नहरो, जलाशयो आदि के द्वारा सिंचाई की जाती थी। धौलावीरा नामक हड़प्पाई स्थल से उन्नत जल प्रबंध (जलाशय) के साक्ष्य प्राप्त हुए है। विद्वानो के अनुसार मोहनजोदडो मे कुओ की अनुमानित संख्या लगभग 700 है।

2

उत्तर संख्या-5

छठी शताब्दी ईसा. पू. मे होने वाली दो प्रमुख घटनाएँ –

(i) छठी शता. ई.पू. मे सोलह महाजनपदो का उदय हुआ।

(ii) इस काल मे ब्राह्मणो द्वारा धर्मसूत्रो, धर्मशास्त्रो की रचना की गई।

2

उत्तर संख्या – 6

गोत्र – 1000 ई. पू. मे प्रचलित एक ब्राह्मणीय पद्धति जिसमे प्रत्येक व्यक्ति को उसके गोत्र के आधार पर वर्गीकृत किया गया। प्रत्येक गोत्र एक वैदिक ऋषि के नाम पर होता था तथा उस गोत्र के सभी सदस्य

2

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

ऋषि के वंशज माने जाते थे। इसे गोत्र व्यवस्था कहा जाता था। इसी प्रकार सभी लोगो को गोत्रों मे वर्गीकृत किया गया।

उत्तर संख्या - 7

इब्नबतूता 1332-33 मे सिंध के रास्ते दिल्ली पहुंचा। उसने दिल्ली की अनेक विशेषताओ का उल्लेख किया। इसने अपनी रिहला मे शहरो का वर्णन करते हुए बताया है कि "यहाँ के शहर चमक-दमक वाले तथा अवसरो से भरपूर होते थे।" उसने डाक व्यवस्था को इतना कुशल बताया कि इससे व्यापारियों को अनेक सुविधाएं दी जाती तथा सुल्तान तक गुप्तचरो की सुचनाएँ 5 दिनो मे ही पहुँच जाती थी। इस प्रकार उसने दिल्ली की विशेषताओ का वर्णन किया है।

उत्तर संख्या - 8

चिश्ती उपासना मे सूफी संतो की दरगाह

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

पर जो संगीत की महफिल होती है। उसमे कव्वाली का विशेष महत्तव है। कव्वाली ऐसे आध्यात्मिक संगीत होते है जिससे परमात्मा की प्रेम की अनुभूति को उभारा जा सके। इसमे सूफी संतो की दरगाह पर उनकी जियारत के अवसर पर कव्वालीयां गायी जाती है। कव्वालियों की शुरूआत तथा अंत कौल से किया जाता है। जिसने चिश्ती समा को एक महत्वपूर्ण आकार प्रदान किया है।

उत्तर संख्या - 9

महानवमी डिब्बा से जुड़े अनुष्ठान निम्नलिखित है-

(i) महानवमी डिब्बा से जुड़े अनुष्ठान सितंबर अक्टूबर के महीनो मे मनाए जाने वाले नौ दिन के हिंदू त्यौहारो से जुड़े हुए होते है। इसमे दुर्गापूजा, दशहरा, नवरात्री आदि के अनुष्ठान संपन्न कराये जाते थे। तथा कुश्ती प्रतियोगिता कराई जाती थी।

(ii) इन अनुष्ठानो के अंतर्गत गाय व भैसो की बली दी जाती थी तथा नाच, संगीत आदि का आयोजन होता था इसके साथ ही राय द्वारा अपनी तथा नायको की सेना का

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

परिक्षण किया जाता था।

उत्तर संख्या -10

"कभी -कभी किसानो और दस्तकारो के मध्य फर्क करना मुश्किल होता था।"

मुगलकालीन समाज के गांवो मे किसान खेती के अलावा अन्य दस्तकारी के कार्य भी करते थे। फसल बुवाई तथा कटाई के बीच की अवधि मे किसान मिट्टी के बर्तन बनाने, कढ़ाई करने, रंगरेजी करने जैसे दस्तकारी कार्य भी करते थे। इसी कारण मुगलकालीन समाज मे किसानो व दस्तकारो के बीच फर्क करना मुश्किल होता था।

2

उत्तर संख्या -11

जोतदार और रैयत मे अंतर निम्न बिंदुओ द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है-

जोतदार - बंगाल के धनी किसानो को जोतदार कहा जाता था।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

इनके पास भूमि के बडे-बडे रकबे होते थे तथा ये गांव मे रहकर छोटे किसानो पर अपना नियंत्रण रखते थे। जिन्हे जोतदार कहा जाता था।

रैयत – मुगलकालीन स्त्रोतो मे तथा किसानो को रैयत कहा जाता था। ये अपनी जमीन पर खेती करते थे तथा उससे अपना जीवनयापन करते थे। कुछ किसान दूसरो की जमीन पर पट्टे पर भी खेती करते थे।

उत्तर संख्या -12

1857 के विद्रोह मे विद्रोहियो द्वारा अलग-अलग स्थानो पर स्थानीय नेताओ राजाओ को अपना नेता घोषित कर दिया। कुछ इस प्रकार की स्थिती भी झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की है थी जिन्हे विद्रोहियो के दबाव मे आकर तथा जनता के आग्रह से बगावत की डोर संभालनी पडी। इस प्रकार झांसी की रानी लक्ष्मीबाई ने 1857 के विद्रोह मे अपना योगदान दिया।

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर संख्या -13

मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान की मांग को जारी रखते हुए संविधान सभा का बहिष्कार कर दिया। कैबिनेट मिशन ने उनकी इस मांग को खारिज कर दिया गया। जिसके प्रतिउत्तर मे तथा एक अलग संविधान की मांग करते हुए मुस्लिम लीग ने 16 अगस्त 1946 को प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस का आवाह्न कर दिया।
इसके अंतर्गत सभी मुस्लिम बहुल इलाको मे हिंदुओ को निशाना बनाया जा रहा था तथा हिंसात्मक प्रतिरोध किया जा रहा था।

2

"खण्ड-स"

उत्तर संख्या -14

सिंधु घाटी सभ्यता की लिपि एक रहस्यमयी लिपि थी क्योंकि -

(1) यह एक ऐसी लिपि थी जो वर्णमालीय लिपि न होकर इसमे चिन्ह दर्शाये गये थे।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(ii) यह लिपि आज तक किसी भी विद्वान के द्वारा पढ़ी नही जा सकी है। इसी कारण इसे रहस्यमयी लिपि कहा जाता था है।

सिंधु सभ्यता की लिपि की अन्य विशेषताएँ -

- यह वर्णमालीय लिपि न होकर इसमे चिन्हो की संख्या 375-400 थी।
- सबसे लंबे अभिलेख मे 26 चिन्ह थे।
- यह आज तक पढ़ी नही जा सकी है। इन्ही कारणो से इसी लिपि को रहस्यमयी लिपि के नाम से भी जाना जाता है।

2

उत्तर संख्या-15 (अथवा)

प्रारंभिक भक्ति परंपरा - प्रारंभिक भक्ति परंपरा छठी से आठवी सदी ई. मे तमिलनाडू के अलवार तथा नयनार संतो के नेतृत्व मे प्रारंभ हुयी।
इसमे ब्राह्मणीय व्यवस्था को नकारा गया तथा सगुण, साकार ईश्वर की उपासना पर बल दिया गया।
सर्वप्रथम यह भक्ति परंपरा तमिलनाडू मे विकसित

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

हुई।

प्रारंभिक भक्ति परंपरा की विशेषताएँ -

- प्रारंभिक भक्ति मे भक्त और ईश्वर के बीच संपूर्ण प्रेम तथा समर्पण का भाव रहता था जिसे भक्ति कहते थे।

- प्रारंभ मे कुछ नेता ऐसे कवि संतो के रूप मे उभरे जिनके आस -पास भक्त कवियो का मेला लगा होता था।

- ये भक्त कवि एक स्थान से दूसरे स्थान अपने ईष्टदेव की भक्ति मे गीत गाते तथा उनका प्रसार करते।

- कुछ स्थानो पर संत कवियो ने पवित्र स्थानो को अपने इष्टदेव का निवास स्थान घोषित कर दिया जहां बाद मे उनके मंदिरो का निर्माण किया गया।

- कुछ स्थानो पर ब्राह्मण बिचौलिए के रूप मे रहते थे किंतु फिर भी इसमे स्त्रीयों तथा शूद्रो को उपस्थित होने की अनुमति थी।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

- प्रारंभिक भक्ति परंपरा की सबसे प्रमुख विशेषता इसमे स्त्रीयों की उपस्थिति ही है।
- इन्होने ब्राह्मणीय ग्रंथो, यज्ञ, जप, तप आदि को अस्वीकार किया।
- भक्ति के मार्ग सभी लोगो के लिए खुले हुए थे चाहे वह गरीब हो, अमीर हो, ऊँची जाति का हो अथवा नीचि जाति का।
- इस परंपरा मे विष्णु तथा शिव की आराधना प्रभावी हो रही थी तथा उनके प्रतीको व अवतारो की पूजा की जाती थी।
- इस काल मे प्रमुख अलवार संत - तोंडराडिप्पोडि तथा अंडाल व नयनार - अप्पार, संबंदर, सुंदरार तथा करइक्कल अम्मइयार प्रमुख है।

इस प्रकार प्रारंभिक भक्ति परंपरा ने समाज मे प्रचलित कुरीतियो के खिलाफ आवाज उठाई तथा उन्होने जन्म पर आधि आधारित श्रेष्ठता को नकारते हुए यह कहा कि भक्ति के मार्ग सभी के लिए खुले है, कोई व्यक्ति ईश्वर की आराधना कर सकता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर संख्या - 16

1857 के विद्रोह के संदर्भ मे अवध मे विभिन्न वर्गो द्वारा अपनी भूमिका निभाई जा रही थी। 1857 मे सबसे अधिक प्रबल विद्रोह अवध मे किया गया था जिसे निम्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है -

तालुकदारो की भूमिका -

2

BSER-180/2025

(i) अवध मे विद्रोह के अन्तर्गत ब्रिटिश सरकार द्वारा एकमुश्त बंदोबस्त लागू कर दिया गया जिसके तहत तालुकदारो से उनकी भूमि छीन ली गई।

(ii) उनके किले नष्ट कर दिए गये तथा उनकी सेना भंग कर दी गई। अनेक जमींदारियां हस्तांतरित की गई।

(iii) इससे तालुकदारो की प्रतिष्ठा को प्रबल आघात पहुंचा तथा उन्होने अंग्रेजो के खिलाफ विद्रोह मे साथ दिया।

किसानो की भूमिका -

Sl.No. : 171263

नामांक Roll No.

[redacted]

SS-13-Hist.

उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2025

SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2025

इतिहास

HISTORY

उत्तर संख्या - 20 (अथवा)

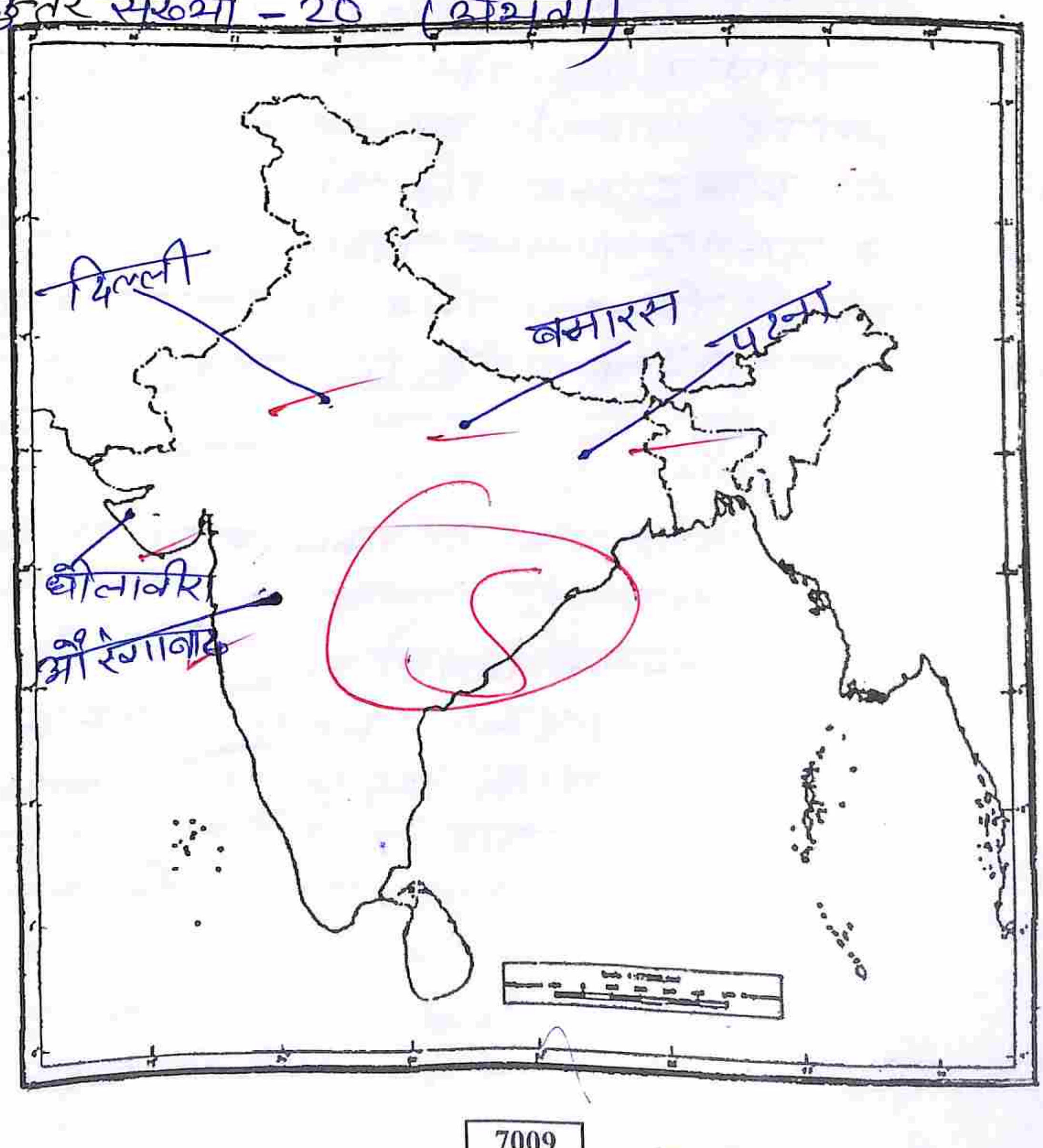

7009

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(i) इस विद्रोह के अंतर्गत किसानो ने भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

(ii) किसानो से अधिक कर वसूली की जाती थी तथा उन्हे अपनी पसंद की फसल को उपजाने की स्वतंत्रता भी न थी।

(iii) अवध को 'बंगाल आर्मी की पौधशाला' के नाम से भी जाना जाता है क्योकि बंगाल के अधिकतर सिपाही अवध से भर्ती होकर ही जाते थे। इस प्रकार किसानो तथा सैनिको के मध्य संबंध घनिष्ठ होने से जब कि सिपाही अने अफसरो के विरोध मे विद्रोह करते तो किसान भी उनका साथ देते थे।

सैनिको की भूमिका -

(i) सैनिको तथा ब्रिटिश अफसरो के बीच अक्सर संबंध तनावपूर्ण रहते थे। ब्रिटिश अफसर सैनिको के साथ गाली-गलौज करते तथा उन्हे समय पर छुट्टी भी नही देते थे।

(ii) सैनिको को स्वयं से कमतर नस्ल का मानने तथा उन्हे वेतन न देने के कारण सिपाही भी इस विद्रोह का हिस्सा बनाए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

- 1857 के विद्रोह के अंतरगति अवध मे सबसे लंबा विद्रोह चला ब्रिटिश अकसरो को मार दिया गया।

- वाजिद अली शाह को निष्कासित करने पर विद्रोहीयो ने नवाब के युवा बेटे बिरजिस कद्र को अपना नेता घोषित कर दिया।

- इस प्रकार अवध मे विद्रोह मे किसानो, तल्लुकदारो तथा सैनिको व आम जनता द्वारा विद्रोहियो का साथ देते हुए अंग्रेजो का कड़ा विरोध किया गया।

उत्तर संख्या - 17

भारत के संविधान मे केन्द्र व राज्य सरकार के मध्य राजकोषीय संघवाद के अन्तरगति शक्तियो का विभाजन किया गया -

राजकोषीय संघवाद - केन्द्र व राज्य सरकार के मध्य शक्तियो का बंटवारा ही राजकोषीय संघवाद कहलाता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

राजकोषीय संघवाद के अंतर्गत राज्य व केन्द्र मे शक्तियो का बंटवारा किया गया जिसमे तीन सूचियां बनाई गई –

सूचियां
- → केन्द्र सूची / संघ सूची
- → राज्य सूची
- → समवर्ती सूची

BSER-180/2025

• **केन्द्र सूची** – इस सूची के अंतर्गत आने वाले सभी विषयो को केन्द्र सरकार के अधीन रखा गया।
जैसे – प्रमुख उद्योगो
खनिज पदार्थों
कंपनी कर
सीमा शुल्क
इन सभी विषयो पर केन्द्र सरकार का नियंत्रण है,

• **राज्य सूची** – इसके अंतर्गत आने वाले सभी विषय राज्य सरकार के अधीन रखे गये।
जैसे – बिक्री कर तथा बोतलबंद शराब पर लगने

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

वाले कर राज्य सरकार के अधीन है।

• समवर्ती सूची - इसके विष अंतर्गत आने वाले विषय केन्द्र व राज्य सरकार के मध्य बांट दिए गए। लेकिन कभी विवादास्पद होने पर केन्द्र के निर्णय को उचित माना जाएगा।
जैसे - आयकर
आबकारी कर आदि।

• इस प्रकार केन्द्र व राज्य के बीच राजकोषीय संघवाद के आधार पर शक्तियों का बंटवारा किया गया।

"खण्ड - द"

उत्तर संख्या - 19

जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक महावीर स्वामी को माना जाता है। ये जैन धर्म के अंतिम 24वें तीर्थंकर थे।

जैन धर्म की प्रमुख शिक्षाएँ निम्नलिखित है -

4

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

- समस्त संसार प्राणवान है – जैन धर्म के अनुसार समस्त संसार प्राणवान है तथा सृष्टि के कण-कण मे आत्मा का वास होता है।

- अहिंसा – जैन धर्म के अनुसार हमे जीवों के प्रति अहिंसा का भाव रखना चाहिए विशेषकर पेड़-पौधो तथा जीव-जंतुओ के प्रति।
- जैन धर्म के अहिंसा के सिद्धांत ने संपूर्ण विश्व की चिन्तवादी परंपराओ को प्रभावित किया है।

- कर्मवाद का सिद्धांत – जैन धर्म के अनुसार मनुष्य को अच्छे कर्म करने चाहिए। उसे अपने कर्मों के फल से ही अच्छे जन्म मिलते है।

- पुर्नजन्मवाद का सिद्धांत – जैन धर्म के अनुसार व्यक्ति को अपने कर्मों के अनुसार ही अगला जन्म मिलता है इसी कारण उसे अपने अच्छे कर्मों पर बल देना चाहिए।

- तपस्या ~~था~~ तप द्वारा मुक्ति – जैन धर्म के अनुसार व्यक्ति को कठोर तप करना चाहिए। इसी से

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उसे मुक्ति मिल सकती है। इस अवधारणा के अनुसार व्यक्ति मृत्यु के पश्चात ही मोक्ष प्राप्त कर सकता है।

• पंचमहाव्रत - जैन धर्म मे भिक्षुओ के लिए पांच व्रतो का उल्लेख किया गया है। जिसमे शुरू के चार पार्श्वनाथ द्वारा जोडे गए तथा अंतिम व्रत महावीर स्वामी द्वारा दिया गया।

* सत्य - व्यक्ति को सत्य बोलना चाहिए।

* अहिंसा - व्यक्ति को हिंसा नही करनी चाहिए।

* अपरिग्रह - अधिक धन संचय न करना।

* अस्तेय - चोरी न करना।

* ब्रह्मचर्य - विषय-वासनाओ से दूर रहना।

• स्यादवाद का सिद्धांत - इसके अनुसार व्यक्ति को संपूर्ण सत्य का ज्ञान होना असंभव है उसे परिस्थिति के अनुसार सत्य का अंश मात्र ही ज्ञात होता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

0

• अनीश्वरवादी दर्शन – जैन धर्म के अनुसार ईश्वर नहीं होता, इस संसार को इंसानों ने ही बनाया है।

• आत्मवादी दर्शन – इसके अनुसार कण-कण मे आत्मा का वास पाया जाता है।

• वेदो मे अविश्वास – इन्होंने ब्राह्मणो द्वारा रचित वेदो को नकारा।

• वर्ण व्यवस्था मे अविश्वास – इस अवधारणा ने जातीय तथा कर्म पर आधारित अवधारणा को तथा सभी वर्णो को अस्वीकार किया।

उत्तर संख्या -18 (अथवा)

"रॉलेट सत्याग्रह से ही गांधीजी एक सच्चे राष्ट्रीय नेता बन गए"।

(1) द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद ब्रिटिश सरकार ने भारत को स्वतंत्रता देने की बजाय सभी क्षेत्रों पर रॉलेट एक्ट लागू कर दिया।

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(II) इसके अंतर्गत अनेक लोगों को बिना मुकदमे जेल मे कैद कर दिया गया। गांधीजी द्वारा द्वितीय विश्व युद्ध मे अंग्रेजो का साथ देने के पश्चात भारत की स्वतंत्रता का आश्वासन लिया गया। किंतु इसके बदले अंग्रेजो ने रॉलेट एक्ट लागू कर दिया।

(III) अंग्रेजो की इस साम्राज्यवादी नीति के दौरान गांधीजी को प्रबल आघात पहुंचा तथा उन्होने इसके विरोध मे रॉलेट सत्याग्रह करना शुरू कर दिया।

(IV) गांधीजी के इस सत्याग्रह के दौरान अनेक लोगो ने उनका साथ दिया तथा वे इस सत्याग्रह मे गांधीजी के साथ खडे हुए।

(V) गांधीजी के इस सत्याग्रह के दौरान ही वे सर्वप्रथम पूरे देश की नजरो मे आये तथा एक सच्चे राष्ट्रीय नेता के रूप मे उभरे।

गांधीजी के द्वारा रॉलेट सत्याग्रह के अंतर्गत की जाने वाली गतिविधियां -

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

- गांधीजी के द्वारा इस एक्ट के विरोध मे सत्याग्रह प्रारंभ किया जिसमे उन्होने समाज के सभी वर्गों का आवाह्यान किया।

- गांधीजी के इस सत्याग्रह मे सभी लोगो, विद्यार्थियो तथा स्थानीय नेताओ द्वारा भाग लिया गया। उन्होने इस सत्याग्रह मे बढ़-चढ़कर अपना योगदान दिया।

- गांधीजी ने इस सत्याग्रह के अन्तरगत अंग्रेजो का विरोध करते हुए सभी स्थानो पर रॉलेट एक्ट का विरोध करने के लिए आवाह्यान किया।

- इसके अंतर्गत पंजाब के स्थानीय नेताओ को गिरफ्तार कर लिया गया।

निष्कर्ष:- इन सभी गतिविधियो के आधार पर गांधीजी एक सच्चे राष्ट्रीय नेता के रूप मे उभरे। तथा उनकी छवि एक लोकप्रिय नेता के रूप मे सभी लोगो के सामने आयी। अतः हम कह सकते है कि रॉलेट सत्याग्रह से ही गांधीजी एक सच्चे राष्ट्रीय नेता बन गए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर संख्या - 20

(अ) बनारस — उत्तरप्रदेश

(ब) दिल्ली — दिल्ली

(स) पटना — बिहार

(द) धोलावीरा — गुजरात

(य) औरंगाबाद — महाराष्ट्र

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-1802025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-180/2025